देकार्त की संदेह विधि

देकार्त ने ज्ञान प्राप्त करने की विधि के बारे में जो कहा गया है उससे यह माना जा सकता है कि वे ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी आरंभिक बिन्दु की तलाश में थे। कोई ऐसा ज्ञान जिस पर संदेह न किया जा सके। उनका ऐसा मानना था कि कोई प्रस्थान बिन्दु मिल जाने पर बुद्धि के सहारे तर्क करते हुए असंदिग्ध ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। किसी असंदिग्ध और निश्चित ज्ञान से दूसरे असंदिग्ध और निश्चित ज्ञान पर पहुंचने का यह गणितीय तरीका है जिसे निगमन भी कहा जाता है।

देकार्त ने अपनी विधि के अनुसार पहले से प्राप्त प्रत्येक ज्ञान को सत्य मानने से इ ंकार किया और उस पर संदेह किया। देकार्त ने अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में होने वाले अनुभवों एवं ज्ञान पर भी संदेह किया। रोजमर्रा की जिन्दगी में होने वाले ऐसे अनुभवों को जिन्हें हम सत्य मानते हैं, उनके बारे में वे कहते हैं कि यह संभव है कि कोई शैतान हमें धोखा दे रहा हो। वह शैतान हमें भरमाए हुए हो। हमें लग सकता है कि हम जाग रहे हैं लेकिन हम सपना देख रहे हों। इस प्रकार देकार्त इन्द्रिय अनुभव से ज्ञात होने वाली प्रत्येक चीज पर संदेह करते हैं। वे एक उदाहरण देते हैं, ''क्या मैं इस पर संदेह कर सकता हूं कि मैं आग के सामने कपड़े पहने बैठा हूं?'' वे कहते हैं, ''हां, ऐसा हो सकता है क्योंकि अनेक बार मैं ऐसे सपने देखता हूं और जबकि मैं बिना कपड़ों के बिस्तर में सो रहा होता हूं। बहुत बार पागल आदमी एक भ्रम की स्थिति में होता है और यह संभव है कि मैं भी उसी की तरह कर रहा हूं।'' इसी तरह वह दूसरा उदाहरण देता है। मान लीजिए, मैं अपने कमरे की खिड़की से बाहर देख रहा हूं और मुझे कोई चीज चलती–फिरती नजर आ रही है। उसने सूट पहना है एवं टोपी लगाई हुई है और वह चल रही है। मैं यह मान बैठता हूं कि वह कोई आदमी है। लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है कि वह कोई मशीन हो और अपने–आप चल रही हो।

देकार्त निश्चित और असंदिग्ध ज्ञान पर पहुंचने के लिए संदेह की विधि को इस हद तक ले जाते हैं कि पहले से ज्ञात कोई भी चीज उससे बाहर नहीं रह जाती। हालांकि ज्यामिति और गणित के ज्ञान को संदेह से परे माना जाता है लेकिन देकार्त का मानना है कि उस पर भी संदेह किया जा सकता है। लेकिन वह कहता है कि ऐसा हो सकता है कि मैं 2+3 जोड़ रहा हूं और संभवतः यह गलत हो क्योंकि कोई शैतान मुझे धोखा देने में लगा हो। यदि देकार्त का संदेह इतना जबरदस्त है तो सवाल उठता है कि फिर उनके अनुसार सत्य और असंदिग्ध ज्ञान किसका और कैसे हो सकता है?

000